# श्री दिगम्बर जैन महासमिति

श्री दिगम्बर जैन समाज की संसद

## पत्रिका

**श्री दिगम्बर जैन महासमिति का लक्ष्य - संगठित समाज**

**श्री दिगम्बर जैन महासमिति के सदस्यों के वितरण हेतु पत्रिका**

# श्री दिगम्बर जैन महासमिति की सदस्यता शुल्क का विवरण

| श्रेणी (CATEGORY) | धनराशि (AMOUNT) | (अवधि PERIOD) |
|---|---|---|
| विशिष्ट शिरोमणि संरक्षक | 100000.00 | आजीवन |
| शिरोमणि संरक्षक | 51000.00 | आजीवन |
| संरक्षक | 11000.00 | आजीवन |
| विशिष्ट सदस्य | 5100.00 | आजीवन |
| सहयोगी सदस्य | 3100.00 | आजीवन |
| सम्मानीय सदस्य | 1100.00 | आजीवन |
| साधारण सदस्य | 500.00 | (पाँच वर्ष हेतु) |

## आवश्यक सूचना

1. पत्रिका शुल्क सदस्यों के लिए 500/– रू वार्षिक देय होगा।
2. सदस्यता पहचान पत्र शुल्क अतिरिक्त 100/– रू देय होगा।
3. अधिक जानकारी एवं सदस्यता फार्म के लिए निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

**नवीन सोगानी**
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

E-2 पहली मंजिल, जवाहर पार्क
हीरा स्वीट्स के पीछे विकास मार्ग
लक्ष्मीनगर, शकरपुर दिल्ली-110092
मो. 9990358901, 9810358901

## सदस्यता शुल्क एवं सहयोग के लिए
## बैंक खाते का विवरण

**Bank Account Detail of** : **Shree Digamber Jain Mahasamiti**

**Account No** : **10170001973962**

**Branch** : Bandhan Bank, Greater Kailash, Delhi-110048

**IFSC Code** : BDBL0001727

वर्ष 7 - अंक 2

जून 2025

Title Code : DELBIL11586

# श्री दिगम्बर जैन महासमिति

सामाजिक, साहित्यिक, राष्ट्रीय चेतना की संदेशवाहक एक मात्र मासिक पत्रिका

राष्ट्रीय अध्यक्ष
डॉ मणीन्द्र जैन
9810043108

राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष
श्रीमती शीला डोडिया

राष्ट्रीय संयोजक
डॉ. रिचा जैन
मो. 9822221951

राष्ट्रीय महामंत्री
प्रवीन कुमार जैन (लोनी)
मो. 9811227718, 9711227718

राष्ट्रीय महिला महामंत्री
इन्दु जैन गांधी

प्रधान सम्पादक
धरणेन्द्र कुमार जैन
मो. 8826578600, 9999495706
ईमेल : dkjdhir@gmail.com

महिला सम्पादक
ममता गंगवाल, धार (म.प्र.)
मो. 9406669696

संपादक (विदेश)
कुँवर पाल शाह U.S.A.

स्वत्वाधिकारी व प्रकाशक
डॉ. मणीन्द्र जैन

**मुख्य कार्यालय**
Shree Digamber Jain Mahasamiti
70, Kailash Hills New Delhi-110065
Mobile : 9810043108,8826578600
E-mail : sdjmsnational@gmail.com

मुद्रक : सेवाभारती प्रिंटिंग प्रेस
हाथरस-204101
मो. 8791580090

## विषय सूची — पृष्ठ संख्या

1. सम्पादकीय..... 2
2. समर्पण.....5
3. साहस..... 6
4. डॉ. वैदिक..... 7
5. राष्ट्रीय जीव..... 11
6. एचोड़ा..... 12
7. कांस्टीस्यूशनल.....13
8. श्री दिगम्बर जैन.....14
9. आचार्य श्री.....16
10. हर्ष पूर्ण सूचना.....17
11. श्री दिगम्बर जैन.....19
12. श्री दिगम्बर जैन..... 20

लेखक के विचारों से सम्पादक या इसकी प्रकाशन संस्था श्री दिगम्बर जैन महासमिति का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

# वृद्धावस्था : नई चुनौतियाँ और नए समाधान

''जावेद शरुद शतम'' यानी सौ वर्ष तक जीने की कामना और आयुष्मान भवः अर्थात लम्बी उम्र पाओ का आशीर्वाद चिरकाल से हमारी संस्कृति का अंग रहे हैं। मनु द्वारा 25–25 वर्ष के चार आश्रमों में मानव जीवन का विभाजन भी इस बात का द्योतक है कि 100 वर्ष की उम्र भारत में आदर्श मानी जाती रही है। व्यक्तिगत स्तर पर भी मोक्ष प्राप्ति स्वर्ग में जाने के प्रलोभन तथा पुनर्जन्म के आश्वासन के बावजूद औसत भारतीय व्यक्ति अधिक से अधिक समय तक दुनिया में रह कर अपनी भौतिक इच्छाओं को पूरा करना चाहता है। मतलब यह है कि लम्बी आयु मनुष्य की स्वाभाविक आकांक्षा है। हम अपने आसपास कितने ही वृद्ध स्त्री पुरुषों की पोतों का मुँह देखने और फिर पोतों की बहुओं तथा उनके बच्चों तक का मुँह देखने के बाद इस संसार से उठाने कही प्रार्थना करते देखते हैं।

युधिष्ठर ने यक्ष के प्रश्न के उत्तर में कि दुनियाँ का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है, कहा था कि दूसरों को प्रतिदिन मरते देखकर भी शेष लोग यह मानकर चलते हैं कि वे हमेशा जीवित रहेंगे। इस तर्ज पर यह भी कहा जा सकता है कि बुढ़ापे की मुसीबतों तथा अभिशापों को जानते हुए भी अधिकतर लोग लम्बी जिन्दगी की कामना करते हैं किन्तु हम जानते हैं कि लम्बी आयु की इस सहज मानवीय कामना की पूर्ति के रास्ते में असंख्य बाधायें आती रही हैं। शारीरिक रोग इसमें सबसे बड़ी रूकावट है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति के आविष्कार से पहले महामारियों में लाखों लोग एक साथ काल कलवित हो जाया करते थे। इसमें अधिक संख्या बच्चों की होती थी, जो वृद्धावस्था तो दूर युवावस्था तक वंचित रहते थे। आधुनिक काल में पश्चिमी जगत में इन महामारियों की पराजय के बाद अब विकासशील देश भी इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, जिनमें भारत भी शामिल है। इसके फलस्वरूप मनुष्य की औसत आयु में उत्तरोत्ता वृद्धि हो रही है।

मनुष्य की औसत आयु बढ़ाना हमारी राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति का मुख्य लक्ष्य रहा है। इस लक्ष्य कों प्राप्त करने की दिशा में घातक बीमारियों पर नियंत्रण, बाल मृत्यु दर में कभी प्रसव के दौरान मृत्यु को रोकने के उपाय, पौष्टिक आहार तथा बुनियादी दवाओं की आपूर्ति जैसे अनेक तरीके अपनाने जा रहे हैं। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि सभी देशवासियों को बुनियादी चिकित्सा सेवायें उपलब्ध हो गई, किन्तु यह सच है कि भारतवासियों की औसत आयु में वृद्धि हुई है।

बड़े–बूढ़ों को सम्मान देना हमारा एक जीवन मूल्य अवश्य है, किन्तु व्यवहारिक धरातल पर अन्य कई आदर्शों की भाँति यह भी बहुत कम अपनी उपस्थिति प्रकट करता है। अपने मृत पूर्वजों को श्राद्ध तर्पण करना भले ही हमारी धार्मिक रीति हो, किन्तु जीवित वृद्धों की देखभाल करना आवश्यक नहीं माना जाता। वृद्धजनों के अनुभव का खजाना, ज्ञान का कोश जीवन के निचोड़ से वाकिफ, दुनियाँ का पारखी

जैसे विशेषज्ञों से विभूषित किये जाने के बावजूद इस सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि वृद्धावस्था अपने आप में अभिशाप है। गौतम बुद्ध ने जिन कारणों से संसार का त्याग किया था, उनमें एक कारण बुढ़ापे की दुरावस्था का दर्शन भी था।

**बुढ़ापें की समस्यायें-**

यों तो व्यक्ति जीवन भर उलझनों से जूझता रहता है किन्तु–बुढ़ापा तो स्वयं में एक समस्या है। इसका कारण यह है कि बाल्यावस्था और युवावस्था में मनुष्यों के कुछ सपने और आशायें होती है। जिन्हें फलीभूत करने के लिए वह संघर्ष करता है। जबकि बुढ़ापे के सामने एक अन्धेरी गली और उसके बाद मौत की घन्टियों की भयावह आवाज के सिवाय कुछ नहीं होता। आज के युग में तो जब भौतिकवाद और उपभोक्ता वाद की छाया तेजी से हमारे समाज की अपनी गिरफ्त में लेती जा रही है, वृद्धावस्था और भी अधिक कष्टदाई बन गई है।

वृद्धावस्था की समस्या व्यक्तिगत तो है ही उसका सामाजिक आयाम भी कम चिन्ताजनकं नहीं है। जिस प्रकार अधिक सन्तान मनुष्य के स्वयं व परिवार के दु:ख दाई होने के साथ–साथ देश के विकास के लिए भी हानिकारक है, उसी तरह बहुत अधिक उम्र के व्यक्तियों की बढ़ती हुई संख्या व्यक्ति के साथ–साथ समाज के लिए भी बोझ है।

पहले हम व्यक्तिगत कष्टों का ही विश्लेषण करें, जिनके कारण वृद्धावस्था को अभिशाप करार दिया जाता है। आज के युग में वृद्धावस्था इसलिए अधिक दु:खदाई हो गई है कि बूढ़े पुरुष और स्त्री का एकांकी पन बढ़ गया है। आपको ऐसे असंख्य उदाहरण अपने आस पास मिल जायेंगे, जिनमें बेटों बहुओं व बेटियों के रहते हुए भी बड़े–बूढ़े नारकीय जीवन बिता रहे हैं। बड़े–बूढ़ों को अस्पताल में तो दाखिला करा दिया गया जाता है किन्तु उनका हाल–चाल पूछने का समय किसी के पास नहीं है। भौतिक सुख एवं समृद्धि की दौड़ में भागते लोगों के पास अपने बच्चों की देखभाल के लिए ही समय नहीं तो बूढ़ों के लिए कौन सिर खपाए। इसका बड़ा कारण है। संयुक्त परिवार का बिखरना। संयुक्त परिवार में वृद्ध व्यक्ति को घर के मुखिया के रूप में मान्यता मिली हुई थी और एक दूसरे की देखा देखी भी उनकी सेवा सुश्रुषा में तो घर के लोग करते थे। किन्तु अब शहरों का जीवन रचना ही इस प्रकार की हो गई है कि उसमें बड़े–बूढों के लिए स्थान ही कहीं नहीं दिखाई देता।

मनोवैज्ञानिक रिक्तता के साथ–साथ आर्थिक निर्भरता भी उनके कष्टों का प्रमुख कारण है जो लोग मनोवैज्ञानिक तथा आर्थिक दोनों तरह से अपने बच्चों पर निर्भर हैं उनकी दुरावस्था की तो कोई सीमा नहीं है। आर्थिक दृष्टि से अधिकांश स्त्रियाँ अपने पति पर निर्भर होती हैं इसलिए पहले से ही शोषित विताने वाली नारी की वृद्धावस्था में अधिक कष्ट झेलने चाहिए। किन्तु यहाँ हमें विडम्बना की स्थिति दिखाई देती है कि वृद्धावस्था में स्त्री का जीवन पुरुष की तुलना में कम कष्टपूर्ण और अपमान जनक होता है। इसका कारण यह है कि घर के कामकाज तथा बच्चों को पालने में बहू–बेटे के मदद करती हैं जिससे उसकी उपयोगिता को मान्यता मिल जाती है लोग अपनी सारी जमा–पूँजी बच्चों का कैरियर बनाने या उनके लिए

मकान आदि बनाने पर खर्च कर देते हैं और पूरी तरह उन पर निर्भर हो जाते हैं। उनकी दशा अपने उन भाईयों से बदतर होती है जो कुछ सम्पत्ति अपने पास रखते हैं। सामना इसी रूप में किया गया है। जर्मनी में अनेक पूँजीपति और उद्योगपति अपनी आय के एक खास हिस्सा इस प्रकार की संस्थाओं के लिए दान करते हैं और सरकार से उन्हें इसके लिए करों में राहत मिलती है। इससे वृद्धों की सहायता के लिए बहुत अच्छा काम हो रहा है। हमारे देश में भी सरकारी तथा स्वेच्छिक आधार पर काम करने वाले लोग तथा संस्थाऐं ही रोग, दुर्बलता और मानसिक अकेलेपन का शिकार इस वर्ग की वास्तविक मदद कर सकती है। इन संस्थाओं को सरकारी सहायता के साथ–साथ व्यापारियों उद्योगपतियों, किसानों तथा वाणिज्य कम्पनियों आदि से वित्तीय सहायता लेनी चाहिए हमारे यहाँ तो दान का बहुत महत्व है किन्तु यह दान अधिकांशतः धार्मिक संस्थाओं को दिया जाता है। चेतना वाले अनेक लोग अब समाजिक कार्यो के लिए भी दान देने लगे हैं। विशेष अभियान चलाकर कई लोगों को इस काम के लिए तैयार करना सम्भव है।

- धरणेन्द्र कुमार जैन, नई दिल्ली

## मधु पाटनी एवं राकेश पालीवाल जिला स्तर पर सम्मानित

29 वे जिला स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी एवं लायंस क्लब अजमेर आस्था के वरिष्ठ सदस्य लायन राकेश पालीवाल के द्वारा ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से दी गई प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय सेवा के लिए तिलक लगाकर,माल्यार्पण कर, शाल ओढ़ाकर व साफा पहनाकर श्रीफल भेंट करते हुए जिला स्तरीय प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर के अध्यक्ष अतुल पाटनी ने बताया कि शिक्षा अधिकारी शिव कुमार दुवे, जिला शिक्षा अधिकारी गोविंद नारायण, जग नारायण व्यास व अनिल कुमार शर्मा के मुख्य आथित्य में आयोजित समारोह में मधु पाटनी एवं राकेश पालीवाल द्वारा दी जा रही सेवाओं का सदन में प्रमुखता से उल्लेख किया गया इस अवसर श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर संभाग के अध्यक्ष अतुल पाटनी ने सदन में दिए अपने उद्‌बोधन में दोनों संस्थाओं के कार्य कलापों की जानकारी दी समारोह में अजमेर जिले की अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी एवं शिक्षा विभाग से जुड़े व्यक्ति मौजूद रहे ।

## समर्पण हमारे लौकिक एवं पारलौकिक जीवन की उन्नति के लिए आवश्यक है।

समर्पण प्रत्येक प्राणी के लिए अत्यंत आवश्यक भाव है। यही वह भाव है जिसके माध्यम से हम अपने आत्मीय जनों के प्रिय बन सकते हैं। यह स्मरण रहे कि राग, द्वेष, घृणा तथा **स्वार्थ का त्याग किए बिना समर्पण की कल्पना व्यर्थ है।** हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में समर्पण का भाव आवश्यक है। **समर्पण हमारे लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन की उन्नति के लिए आवश्यक है।** संबंधों में मधुरता. के लिए हमें परस्पर समर्पण भाव रखते हुए रिश्तों का निर्वहन करना होता है। स्वार्थ की दृष्टि से बनाए गए रिश्ते अल्पावधि के उपरांत समाप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भी समर्पण भाव का होना अत्यंत आवश्यक है। जब हम अपने संपूर्ण समर्पण के साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिए समर्पित हो जाते हैं, तब कोई भी लक्ष्य हमसे दूर नहीं रहता।

समर्पण के साथ–साथ विश्वास का होना भी आवश्यक है। जिस प्रकार एक बीज धरती में रोपित किया जाता है, तो वह संपूर्ण रूप से खुद को धरती मां की गोद में समर्पित कर देता है। तभी उसमें विकास के नए अंकुर फूट पड़ते हैं। भास्कर की किरणें उसे शक्ति प्रदान करती हैं। पवन की शीतलता उसे दुलारती है। मेघ उसका अभिसिंचन करते हैं। इस प्रकार उसे संपूर्ण प्रकृति का सहयोग एवं साहचर्य मिलने लगता है। उसके बाद वह धीरे–धीरे एक संपूर्ण वृक्ष का आकार ले लेता है। एक ऐसे वृक्ष का, जिसके आश्रय में तमाम प्राणी शीतलता प्राप्त करते हैं। यही नहीं, वह वृक्ष सैकड़ों बीजों के जनक होने का गौरव भी प्राप्त करता है।

अणु से विभु, लघु से विराट बनने की प्रक्रिया आत्मसमर्पण के सांचे और ढांचे में परिपूर्ण होती है। समर्पण हमारे अहंकार को समाप्त कर हमें सामाजिक कल्याण हेतु उपयुक्त भी बनाता है। **समर्पण से ही किसी का विश्वास अर्जित किया जा सकता है।** इसी विश्वास से प्रायः हम जीवन के सबसे अमूल्य अवसर प्राप्त करते हैं। यही अवसर हमारी प्रगति में निर्णायक सिद्ध होते हैं।

**- डॉ. मणीन्द्र जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष**

राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानाजी के साथ सोनी जी की नसीया जी में कार्याध्यक्ष मधु पाटनी, अजमेर

# साहस एक ऐसी शक्ति है, जिसके सामने डर अपना सब कुछ खो देता है...

जब हमारे आत्मविश्वास में कमी आती है, तो हमारे भय का जन्म होता है। इसका हमें कोई सटीक आभास नहीं होता है कि भविष्य में क्या होगा, लेकिन हम अक्सर इसे लेकर मन–ही–मन बहुत कुछ सोचने लगते हैं। ऐसे में यदि हमारे विचार सकारात्मक होते हैं, तो हमारा आत्मविश्वास डिगने लगता है और जाने–अनजाने हम भय के जाल में फंस जाते हैं। इस स्थिति में मनुष्य के लिए भय को अनदेखा करना आसान नहीं होता, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि वह भय का सामना ही न कर पाए। भय से बचने के लिए मनुष्य को थोड़ा साहस जरूर दिखाना पड़ता है। जान लीजिए कि जो डर–से–डर गया, वह मर गया वरना डर के आगे जीत है। डर और साहस का एक संबंध है, क्योंकि साहस न होना ही डर के पैदा होने का कारण होता है। **साहस एक ऐसी शक्ति है, जिसके सामने डर अपना सब कुछ खो देता है।** मनुष्य को सर्वप्रथम अपने भय की पहचान करनी चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि अपने भय को पहचाने बगैर हम कभी उससे छुटकारा नहीं पा सकते। जिस बात या कार्य से आपको भय लग रहा है, उस कार्य को बार–बार करें। इसके बावजूद आपका भय कायम है, तो उस कार्य को तब तक करते रहें, जब तक आपका भय पूरी तरह से भाग न जाए। आप जितनी बार भय देने वाले कार्य को करेंगे, उतनी आपकी हिम्मत बढ़ती जाएगी। एक समय ऐसा जरूर आएगा, जब आपके भय को उलटे पैर भागना ही पड़ेगा। वैसे वह दुनिया बड़ी मनोरम और सुंदर है, इसमें भय जैसा कुछ भी नहीं है। भय तो हमारे ही मन की एक स्थिति है।

किसी के लिए ऊंचे पहाड़ रोमांच का एक साधन है, तो दूसरे को पहाड़ की ऊंचाई मृत्यु का भय दिखाती है। पहाड़ अपनी जगह खड़े हैं, लेकिन मनुष्यों की मनोदशा बदली हुई है। भय कुछ और नहीं, बल्कि पाने की लालसा और खोने का डर है। जो मनुष्य यह बात जानते हैं कि वे इस धरती पर खाली हाथ आए हैं और उन्हें खाली हाथ ही जाना है, तो उन्हें कभी किसी बात का भय नहीं होगा। अगर आपको यह पता चले कि आज आपकी जिंदगी का आखिरी दिन है, तो आप भय में दिन गुजारेंगे या प्रसन्नता में? मनुष्य को अपनी मृत्यु का भय अपने दिमाग से निकाल देना चाहिए। उसकी मृत्यु अटल सत्य है, इसलिए उसे मृत्यु से डरने के बजाय उसका स्वागत करना चाहिए तो हर दिन को ऐसी भावना से जीना चाहिए कि वह उसकी जिंदगी का आखिरी दिन है।

**- ममता गंगवाल, महामंत्री**

- **कुल की प्रतिष्ठा नम्रता और सद्व्यवहार से होती है।**
- **कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थाई रखती है और नये मित्र बनाती**

# डॉ. वैदिक की स्मृति संध्या पर पद्मविभूषण राम बहादुर राय आचार्य प्रमोद कृष्णम, विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष आलोक कुमार व सैकड़ो लोगों ने दी पुष्पांजलि

**स्वामी सुशील गोस्वामी, पूर्व सांसद संतोष भारतीय, जगदीश मित्तल, बी एल गौड़, विजय जौली, सुधीर गोयल संदीप मारवा, डॉ. खैरा आदि वक्ताओं ने महान विचारक तथा जन दक्षेस के द्वारा विश्व शांति का जनक बताया**

## बांसुरी वादक मुस्तफा हुसैन ने मंत्रमुग्ध किया, मणीद्र जैन ने सभी का स्वागत तथा ट्रस्टी विपिन गुप्ता ने आभार व्यक्त किया, स्वामी संपूर्णानंद ने संचालन में डॉ वैदिक के संस्मरण सुनाए

नई दिल्ली, देश के महान विचारक, पत्रकार लेखक तथा 'जन दक्षेस' (अंतरराष्ट्रीय संगठन) के संस्थापक डॉ. वेद प्रताप वैदिक के द्वितीय पुण्यतिथि पर जनदक्षेस द्वारा स्मृति भजन संध्या का भावपूर्ण आयोजन विगत दिवस नई दिल्ली के ईस्ट ऑफ कैलाश में सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक मुस्तफा हुसैन और श्री हुसैन की बेटी चाहत हुसैन ने गणपति वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की तथा सपना हुसैन ने भी भजनों के द्वारा डॉ. वैदिक को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुए भजन संध्या को भावांजलि का रूप दिया। कार्यक्रम की शुरुआत में **जनदक्षेस के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. मणीन्द्र जैन ने सभी का स्वागत करते हुए वैदिक के जन दक्षेस के उद्देश्यों तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा करते हुए उन्हें देश का महान पत्रकार राष्ट्रवादी विचारक तथा विश्व कल्याण की भावना से जनदक्षेस की स्थापना के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।** डॉ. वैदिक को श्रद्धांजलि देने वालों में पद्म विभूषण रामबहादुर राय, ने डॉ. वैदिक को महान पत्रकार विचारक चिंतक और हिंदी का प्रबल समर्थक बताया तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके संपर्कों को याद किया। विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने डॉ. वैदिक को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनका हंसमुख चेहरा और उनका व्यक्तित्व सभी को आकर्षित करता था उनके किए हुए कार्य को आगे बढ़ने का दायित्व और जन दक्षेस से जुड़े हुए लोगों का है और हम लोग सब उनके साथ हैं, मुख्य वक्ता कल्कि धाम के पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने वैदिक को परम विद्वान तथा कभी क्रोध न करने वाला व्यक्तित्व और सभी को अपनी ओर आकर्षित कर अपने से जोड़ लेने का चुंबकीय आकर्षण वाले व्यक्तित्व का धनी बताया। राष्ट्रीय कवि संगम के संस्थापक जगदीश मित्तल ने कहा कि डॉ. वैदिक का हमारा बहुत ही निकट का साथ था और उनके जाने से जो पत्रकारिता जगत में रिक्तता हुई है उसकी पूर्ति वर्तमान के दशकों में होना मुश्किल है।

देश के जाने–माने उद्योगपति व साहित्यकार गौड ग्रुप के संस्थापक श्री बी एल गौड़ने डॉ वैदिक को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि डॉ. वैदिक जी देश के महान पत्रकार, चिंतक, विचारक के साथ–साथ एक संवेदनशील हृदय के हंसमुख स्वभाव और प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी भारत देश की ऐसी शख्सियत थे जिनको हर व्यक्ति जानता था और उनके अंतरराष्ट्रीय संबंधों की दाद देनी होगी। इस अवसर पर श्री गौड़ ने उन पर लिखी एक कविता भी पढ़ी। बीकानेर वाला समूह के सीएमडी नवरत्न अग्रवाल ने डॉ. वैदिक के साथ अपने पारिवारिक और साहित्यिक संबंधों की चर्चा करते हुए उन्हें महान देशभक्त हिंदी का परम विद्वान और समर्थन तथा राष्ट्रीय हितों के लिए अपने लेखनी से जो सेवाए की, तथा आजीवन

जन–दक्षेस से जुड़े रहकर कार्य करने का संकल्प लिया। देश के जाने माने फिल्म कला प्रशिक्षण संस्थान के संस्थापक संदीप मारवाह (नोएडा) ने डॉ. वैदिक के व्यक्तित्व को बहुआयामी बताते हुए कहा कि वह व्यक्ति के गुणों की पहचान बहुत जल्दी कर लेते थे, और उसको लोगों को बताते भी थे वह कभी किसी की बुराई नहीं करते थे, यह उनकी महानता थी, उनके मुस्कराते रहने का स्वभाव सभी को आकर्षित करता था। वैदिक जी के प्रिय वरिष्ठ संपादक संतोष भारतीय (पूर्व सांसद) ने वैदिक जी को अपना मार्ग दर्शक तथा देश का महान पत्रकार बताते हुए उनके व्यक्तित्व को बहु आयामी तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि ऐसा कोई राजनेता नहीं था जो वैदिक जी से प्रभावित न हुआ हो, जन दक्षेस उनकी विश्व कल्याण की कल्पना थी, और इसको आगे बढ़ाने के लिए सभी को प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में श्रद्धांजलि देने वालों में प्रमुख वक्ताओं में उज्जैन से पधारे सेवा धाम आश्रम के संस्थापक सुधीर गोयल ने वैदिक जी को याद करते हुए बहुत भावुक होकर कहा कि वह तो मेरे पिता के समान थे और हमारे उज्जैन आश्रम में कितनी बार आकर उन्होंने हमको जो प्रेरणा और आशीर्वाद दिया, ऐसे महापुरुष संसार में बहुत कम है मैं वैदिक जी को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि देकर बहुत भावुक भी हूं और आज भी यहां प्रेरणा लेकर जा रहा हूँ जैन मुनि विवेक मुनि जी ने डॉक्टर वैदिक के व्यक्तित्व को अंतरराष्ट्रीय शिखर पुरुष बताया और कहा की उनको दुनिया एक लेखक विचारक चिंतक के रूप में जानती थी और उनकी ख्याति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत के विद्वानों की सूची में स्थान दिलाने में अग्रणी थी। स्वामी सुशील गोस्वामी ने डॉ. वैदिक को अपना बहुत पुराना मित्र बताते हुए कहा कि उनके जैसा विचारक, चिंतक हमारे देश में होना बड़ा मुश्किल है, वह दूर दृष्टि के विचारों वाले विश्व स्तर के लेखक पत्रकार थे, राजस्थान से पधारे कबीरपंथी संत नानक जी महाराज ने डॉ. वैदिक से अपने संबंधों की चर्चा करते हुए उन्हें देश का वरिष्ठतम पत्रकार तथा संवेदन शीलता के विशाल वट वृक्ष की संज्ञा दी, वैदिक जी के प्रिय मित्र रहे जन दक्षेस के पूर्व ट्रस्टी श्री एस के अग्रवाल ने डॉ. वैदिक के अंतरंग संस्मरणों से सभी को भावुक किया और उनके अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व को उजागर किया, ब्रजकला केंद्र के संस्थापकों में से एक समाजसेवी विष्णु प्रसाद गोयल ने डॉ. वैदिक को याद करते हुए कहा कि मेरा उनका पारिवारिक संबंध होने के साथ ही ब्रज कला केंद्र से उनका लगाव इतना अधिक हो गया था कि विगत 2023 में वह हमारे ब्रज कला केंद्र मुख्य अतिथि थे उनके जाने से जो रिक्तता हुई है उसकी भरपाई करना मुश्किल है, देश के जाने–माने कानून विद डॉ. ओपी शुक्ला (आईएलएस) ने डॉ. वैदिक को याद करते हुए कहा कि मेरा उनसे निकट का संबंध नहीं रहा लेकिन उनके बारे में जितना जानता हूं वह उनको महान बनाने और उनके व्यक्तित्व और विचारों को सारी दुनिया में स्थापित करने में बहुत बड़ा योगदान करने वाला है। भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता डॉ. विजय खैरा ने डॉ. वैदिक के व्यक्तित्व और । कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की और उन्हें देश का महान पत्रकार विचारक बताया, जाने–माने मोटिवेशनल प्रवक्ता मास्टर जी ने डॉ. वैदिक को याद करते हुए कहा कि मैं डॉ. वैदिक से कभी मिला तो नहीं लेकिन उनके बारे में जितना सुना और जाना वह उनकी महानता का गुण प्रदर्शित करता है और ऐसे व्यक्तित्व के लिए श्रद्धांजलि

अर्पित करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है तथा उनके विचारों से प्रेरणा लेने का भी अवसर भी मिला, जेएनयू के प्रोफेसर संजय भारद्वाज ने जन दक्षेस की कल्पना और उसके आगे ले जाने के प्रयासों का विस्तार से वर्णन करते हुए डॉ. वैदिक को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की, स्पेन से पधारे स्वामी उमेश जी महाराज ने डॉ. वैदिक के कृतित्व और व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उनको अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि देता था उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर का व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि दुनिया में उनके संबंधों की श्रृंखला बहुत बड़ी थी।

एन डी आईआईटी के संस्थापक डॉ. संत कुमार चौधरी ने डॉ. वैदिक को याद करते हुए घोषणा की कि हम जन दक्षेस के साथ जुड़कर डॉ वैदिक के सपनों को पूरा करेंगे और अपने शिक्षण संस्थानों में उनके विचारों को जनमानस तक पहुंचाने के लिए संकल्पित हैं। कमला नेहरू कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. सुषमा चौधरी ने डॉ. वैदिक के साथ अपने पारिवारिक संबंधों की चर्चा करते हुए उन्हें महान दार्शनिक तथा परम विद्वान बताते हुए बहुआयामी व्यक्तित्व की चर्चा की। श्रद्धांजलि देने वालों में श्रीनिवास पुरी सभासद राजपाल, डॉ. वैदिक को एक महान चिंतक विचारक बताया। अगर तुम का संचालन कर रहे हैं संपूर्ण आनंद जी महाराज ने डॉ. वैदिक के साथ अपने संबंध के साथ जोड़ते हुए उनके विचारों तथा जन दक्षेस के उद्देश्यों और उसकी प्रगति तथा भविष्य की योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। जन दक्षेस के ट्रस्टी नेशनल एक्सप्रेस प्रकाशन समूह के संस्थापक तथा भारतीय मतदाता संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष से विपिन गुप्ता ने डॉ. वैदिक को याद करते हुए कहा कि मेरा संपर्क उनसे 1977 में जबसे हुआ तब से आजीवन मेरे गुरु के रूप में स्थापित रहे और आगे भी मैं उनके विचारों को देश दुनिया में प्रचारित प्रसारित करने के लिए जन दक्षेस और नेशनल एक्सप्रेस के माध्यम से तत्पर रहूंगा। श्री गुप्त ने सभी पधारे हुए महानुभावों को आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर मुस्तफा हुसैन द्वारा निर्देशित संगीत का एल्बम 'हम सनातनी' तथा नेशनल एक्सप्रेस द्वारा प्रकाशित डॉ. वैदिक पर विशेषांक का विमोचन आचार्य प्रमोद कृष्णम जी तथा आलोक कुमार अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद तथा वहां उपस्थित सभी साधु संतों एवं मुस्तफा हुसैन जी आदि के द्वारा संपन्न हुआ। पद्म विभूषण डॉ. राम बहादुर राय, डॉ. मणीन्द्र जैन, विपिन गुप्ता संस्थापक नेशनल एक्सप्रेस प्रकाशन समूह, धरणेन्द्र कुमार जैन, मिथिलेश कुमार, कमल किशोर सिंह, स्वामी उमेश योगी, अलका जैन, श्रीमती रजनी गुप्ता संपादिका, महंत डॉ. नानकदास जी महाराज, स्वामी विवेक मुनि, आचार्य सुशील मुनि, स्वामी सम्पूर्णानंद, मुरारीसिंह, चाहत हुसैन, सपना हुसैन, गुलजार, अभिनव शर्मा, हिमांशु शेखर शर्मा, धर्मपाल चौधरी, विष्णु प्रकाश गोयल, डॉ. किशनझा, डॉ. मुस्तफा हुसैन, सुरेन्द्र अग्रवाल, डॉ. संत कुमार चौधरी, अभिषेक, कृष्ण कुमार नरेड़ा, रविन्द्र डबास, एच.एन. शर्मा, सुधीर भाई गोयल, प्रो. आशुतोष गर्ग, राजेश कुमार सूद, मनीष, सुधा सिंह संजीवनी, विश्वनाथ अग्रवाल, विजय नारायण श्रीवास्तव, डॉ. अर्जुन चौधरी, डॉ. सुषमा चौधरी, रामनाथ शर्मा, रजनी गुप्ता,

विशाल जैन, प्रिया जैन, कौशल किशोर, अनिल कुमार महेश्वरी, सुधीर शुक्ला, बी.एल. गौड़, चौ. प्रवीण भारतीय, आकाश नागर, नीरज भाटी, पल्लन प्रकाश झा, डॉ. जी. एन. झा, डॉ. सुषमा एडवोकेट, पवन शर्मा, विनायक मिश्रा, राज कुमार शर्मा, अजय शर्मा, प्रो. संजय कुमार भारद्वाज, सुशील जैन, जगदीश मित्तल, महेन्द्र सिंह, मीनू भंडारी, राजकिरण कुमार, राज माता अंबिका, जगदीश चौधरी, डी.एन. झा, मोती प्रसाद, पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णन, आलोक कुमार, रूपक जैन, प्रिंस कुमार जीवा, सुधीर सिंह, स्वामी शरणागत जी ने डॉ. वेदप्रताप वैदिक जी की स्मृति में आयोजित इस भजन संध्या में श्रद्धांजलि देने वालों ने अपनी भावपूर्ण पुष्पांजलि अर्पित की ।

**कार्यक्रम की झलकियाँ...**

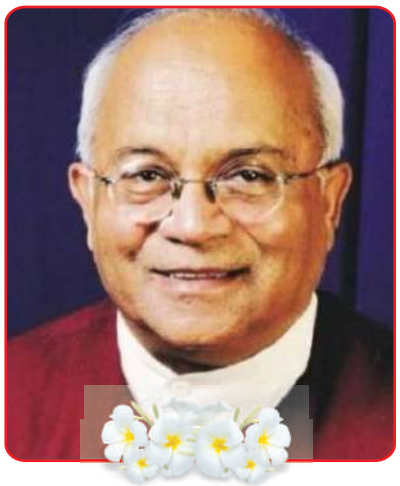
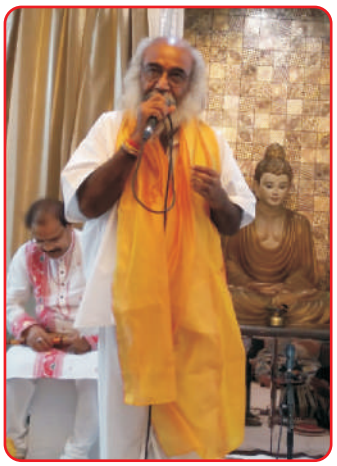

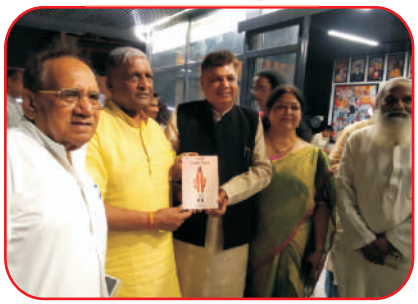

**कभी भी जोखिम लेने से डरना नहीं चाहिए**
**अगर आप सफल हो जाते हैं, तो दूसरों का नेतृत्व करते हैं।**
**अगर असफल होते हैं, तो**
**आप दूसरों का मार्गदर्शन कर सकते हैं !**

**- धरणेन्द्र कुमार जैन 'धीर'**

## !! भावपूर्ण श्रद्धांजलि !!

मुझे व मेरी पत्नी अलका जी को कनाडा जाते समय फ्रैंकफर्ट एयरपोर्ट पर मेरे मित्र आर.के. त्रिवेदी जी द्वारा श्री विजय रुपाणी जी के प्लेन क्रेश में आकस्मिक निधन की सूचना मिली। मेरे परम मित्र श्री विजय रुपाणी जी जो कुछ समय पहले ही मेरे घर पर आए थे तथा जिनके साथ पिछले साल जैन सेंटर के उद्घाटन के समय में लंदन में काफी अच्छा समय व्यतीत किया था, तथा उन्ही के द्वारा मुझको लंदन में जैन सेंटर के उद्घाटन के समय में भामाशाह पुरस्कार भी दिया गया था । गांधीनगर विजिट के दौरान उनके घर पर भी गया था तथा उन्होंने और भाभी अंजलि जी ने मुझे तथा मेरी पत्नी अलका जी को स्वादिष्ट भोजन कराया था तथा बाहर तक छोड़ने भी आए थे। ऐसे आत्मीय मित्र के आकस्मिक निधन से हम सभी परिवारजन दुखी हैं तथा हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं–

–डॉ. मणीन्द्र जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिगंबर जैन महासमिति

## ऐंचौड़ा कंबोह स्थित श्री कल्कि धाम में शिला स्थापना महापर्व का किया गया आयोजन, देश की कई हस्तियों ने किया प्रतिभाग

ऐचौड़ा कंबोह स्थित श्री कल्किधाम में आयोजित शिला स्थापना पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. मणीन्द्र जैन शिलापूजन करते शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती जी, आनंद पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद, अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम समेत अन्य लोग।

विकास खंड असमोली के गांव ऐचौड़ा कंबोह स्थित श्री कल्कि धाम में बुधवार को एक ऐतिहासिक अवसर पर शिला स्थापना दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम में जब जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारका शारदा पीठाधीश्वर पूज्य स्वामी सदानंद सरस्वती जी महाराज ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पूजित कूर्म शिला को गर्भगृह में विधिपूर्वक स्थापित किया तो उज्जैन महाकालेश्वर से आए पुरोहितों के मंत्रोचार से पूरा परिसर गूंजायमान हो उठा। इसके बाद एक–एक कर आए अतिथियों ने शिला पूजन कर उनकी स्थापना की। इस दौरान शंकराचार्य सरस्वती जी ने कहा कि आचार्य प्रमोद कृष्णम के 18 वर्षों के कठोर तप, संघर्ष और संकल्प का यह परिणाम है। लेकिन यह केवल उनका व्यक्तिगत विजय नहीं, सम्पूर्ण सनातन धर्म का गौरव है। यह धाम सनातन संस्कृति को नई ऊंचाई देगा। यहाँ भगवान विष्णु के दसों अवतारों के लिए दस गर्भगृह बनाए जाएंगे। शास्त्र सम्मत आचरण प्रत्येक मनुष्य की जिम्मेदारी है। जैसे बिना टिकट यात्रा करने पर दोष रेलवे का नहीं होता, वैसे ही धार्मिक जीवन शास्त्रों के अवेहलना का दोष भी धर्म का नहीं, व्यक्ति का होता है ।

**पीएम की पूजी हुई शिला को मिला गर्भगृह में स्थान** आचार्य प्रमोद कृष्णम जी ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पूजी हुई शिला को गर्भगृह में स्थान दिया गया है। वह यहां भूमि पूजन व शिला पूजन के लिए आए, तो यह स्पष्ट हो गया कि अब कोई शक्ति इस धाम को बनने से रोक नहीं सकती।

**ऐसा होगा धाम** कल्कि धाम मंदिर में जगत के पालनहार भगवान श्री हरि के 10 अवतारों के लिए अलग–अलग 10 गर्भगृह बनाए जाएंगे। 5 एकड़ में बनने जा रहा यह अद्भुत धाम लगभग 5 सालों में तैयार होगा ।

**विश्व हिंदू परिषद और संत समाज का समर्थन** विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि यह शुभ दिन लंबे संघर्ष के बाद आया है। कट्टरपंथी और सत्ता दोनों का विरोध सहा, लेकिन अब बाधाएं समाप्त हो गई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शिला को पूजना और शंकराचार्य भगवान द्वारा शिलाओं को स्थापित करना इस बात की घोषणा करता है कि अब कोई भी बाधा इस घाम को बनने से नहीं रोक सकती। आनंद पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद जी महाराज ने कहा कि कल्कि धाम का निर्माण भगवान के अवतरण की पूर्व सूचना है। यह पूरे विश्व को एक संदेश देगी।

5 जून 2025 को कांस्टीट्यूशनल क्लब ऑफ इंडिया दिल्ली में विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रमुख व्यवसायी एवं समाजसेवी डॉ. मणीन्द्र जैन को प्रोग्रेसिव फाउंडेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स द्वारा एंबेसडर ऑफ ग्रीन रिवश्वल्यूशन अवार्ड से सम्मानित किया गया।

-राजेश कुमार (संयोजक)

जीव दया दिवस के रूप में मनाने हेतु हम सभी वृद्ध आश्रम गए । वहां पर हमने निवासरत बुजुर्गों के साथ कुछ समय बिताया ,उन्हें दाल चावल तेल आदि आदि राशन, फल, और वस्त्र वितरित किए साथ ही सामूहिक रूप से हमारे जल,थल,वायु सेना के जवानों के लिए उनकी रक्षा हेतु ,वीर प्रभु से प्रार्थना की ।

- रश्मि बज, अध्यक्ष गुना संभाग

## श्री दिगम्बर जैन महासमिति के चुनाव प्रक्रिया में निर्विरोध जीत पर किया सत्कार...

नागपुर, कार्यालय प्रतिनिधि. श्री दिगंबर जैन महासमिति 2025–28 के चुनाव प्रक्रिया में निर्विरोध जीत हासिल करने पर सैतवाल जैन समाज की सत्कार आयोजन समिति द्वारा सैतवाल जैन संगठन मंडल, महावीर नगर के सभागृह में अध्यक्ष सुनील जैन पेंढारी, महामंत्री प्रशांत मानेकर जैन एवं कोषाध्यक्ष महेन्द्र जैन वाडी का सत्कार किया गया । सत्कार समारोह के अध्यक्ष सुभाष मचाले, स्वागताध्यक्ष अधिवक्ता विकास श्रावणे, प्रमुख अतिथि के रूप में अखिल भारतीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री सन्तोष जैन पेंढारी, श्री दिगम्बर जैन परिवार मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष आनंद मौजीलाल जैन, श्री दिगम्बर जैन मंदिर सदर के सचिव हुकुमचंद जैन सेठी उपस्थित थे ।

लंदन के हाउस ऑफ कॉमन्स (पार्लियामेंट में संपन्न हुए लंदन इंटरनेशनल कॉन्क्लेव एवं समिट के भव्य समारोह में डॉ.मणीन्द्र जैन, अध्यक्ष एशियन अरब चेंबर ऑफ कॉमर्स एवं विभिन्न संस्थाओं को रिप्रेजेंट कर भारत का सम्मान देश और विदेश में बढ़ाने के लिए सम्मानित किया गया । कार्यक्रम में भारत से आए हुए माननीय सांसद श्री के.सी. त्यागी जी तथा इंग्लैंड के मिनिस्टर, लॉर्ड्स, मेयर आदि उपस्थित थे।

**- मरगूब त्यागी, संयोजक**

## श्री दिगंबर जैन महिला महाससमिति एवं युवा महिला संभाग के तत्वावधान में घर-घर मंगलाचार कार्यक्रम की झलकियां

श्री दिगंबर जैन महिला महाससमिति एवं युवा महिला संभाग के तत्वावधान मे श्रीमती कला डिम्पल रेखा बज के निवास स्थान पर घर–घर मंगलाचार कार्यक्रम बहुत ही हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत भक्तिनृत्य करते हुए तृप्ति जैन के मंगलाचरण से हुआ पिता सिद्धार्थ की भूमिका सुमन पाटनी व माता त्रिशला की भूमिका श्रीमती लता जैन ने निभाई किशनगढ़ से आए समीति सदस्य रेखा झाझंरी ने ओ रे सखी मंगल गाओ, आज प्रभु का जन्म कल्याणक मनाओ आदि भजनों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया खुशी बज ने बाजे कुण्डलपुर में बधाई पर भक्तिभनृत्य किया रेखा बज ग्रुप ने प्रभुजी आजोजी महारै आंगणे भजन पर भक्ति की सिद्धी झामनानी ग्रुप ने महावीर स्वामी के संदेश व सिद्धांत जीओ ओर जीने दो, अहिंसा परमो धर्म पर विस्तार से नाटिका के रूप मे बताया कला बज 26 वर्षो से महावीर जन्मोत्सव मनाती आ रही हैं श्रीमती निर्मला पांड्या ने श्रेष्ठ कार्यो के लिए मधु पाटनी व मंजुला जैन का पिन लगाकर सम्मानित किया ।

डिम्पल बज ने कहा इस अवसर पर संरक्षक सूर्यकांता जैन, समिति संस्थापक निर्मला पांड्या कोषाध्यक्ष सुषमा पाटनी,रेणु पाटनी, अंजु अजमेरा,इन्द्रा कासलीवाल, मंजुला जैन, प्रभा जैन सहित 80 से अधिक महिलाए उपस्थित होकर धर्म लाभ लिया ।

**- मधु पाटनी, कार्याध्यक्ष अजमेर**

जो पीड़ा तुम स्वयं बर्दाश्त नहीं कर सकते वो, किसी और को भी मत दो
प्रकृति का नियम है कि आज तुम जो दूसरों को दोगे कल वही तुम्हे ब्याज सहित मिलेगी।

जिंदगी में सबसे बड़ा धनवान वो इंसान होता हैं...
जो दूसरों को अपनी मुस्कुराहट देकर उनका दिल जीत लेता हैं...!

# आचार्य श्री के मुनि दीक्षा दिवस पर धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन

**श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग अजमेर की गोधा गवाडी ईकाई के तत्वावधान में भक्ति कार्यक्रम**

श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग अजमेर की गोधा गवाडी इकाई के तत्वावधान मे कीर्ति स्तम्भ पर रिद्धि मंत्रों का उच्चारण करते हुए 48 दीपक प्रज्ज्वलित कर भक्तामर स्त्रोत का पाठ व भजनों की प्रस्तुति अनासक्त महायोगी संत शिरोमणि समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर महाराज के 58 दीक्षा दिवस के उपलक्ष मे रखा समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने बताया कि आज से 58 वर्ष पूर्व आचार्य श्री ने इसी कीर्ति स्तंभ से मुनि दीक्षा ली थी गोधा गवाड़ी इकाई की नव पदास्पित अध्यक्ष अनिता बज एवं मंत्री संतोष बाकलीवाल ने बताया भक्ति से भरपूर कार्यक्रम में विद्यासागर नाम हमें प्राणों से भी प्यारा है व सुर से सुनाऊं सरगम से सुनाऊं महिमा गुरुवर नाम की आदि भजनों पर भक्ति की इस अवसर पर मेना गोधा, अनीता भरत जैन, प्रियंका जैन, अंजू मनीष अजमेरा, समिति एवं इकाई की सदस्याओं के साथ जैन धर्मावलंबियों ने भक्ति कार्यक्रम में भाग लिया ।

- मधु पाटनी, कार्याध्यक्ष अजमेर

❋ बुरा वक्त तो तब से ही शुरू हो जाता है । जब अपने माँ–बाप हमारे डर या चिड़चिड़ाहट के कारण हमें सलाह देना छोड़ देते हैं ।।

❋ केवल ऊँचे सपने देखने से जीवन नहीं बनता, जीवन तो तब बनाता है जब उन्हें पूरा करने का प्रयास किया जाए ।

# हर्षपूर्ण सूचना....

कनाडा के प्रवास के पश्चात लंदन में जैन सेंटर कॉलिंनडेल में संपन्न हुए दूसरे वर्ष के ध्वजारोहण समारोह में मुझे भी धर्मपत्नी अलका जी के साथ तीर्थंकर मुनिसुव्रत जी भगवान के शिखर पर ध्वजारोहण का सौभाग्य परम पूज्य आचार्य श्री नय पद्मसागर जी महाराज साहब एवं विदुषी साध्वी मैयणा जी महाराज साहब के आशीर्वाद से संचालित जैन इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन के प्रतिनिधि के रूप में प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि 2 साल पहले जैन सेंटर कोलेंनडेल में भव्य प्रतिष्ठा समारोह हुआ था ,उसमें भी मुझको भारत से गए सभी इष्ट मित्रों के साथ विशेष कर श्री घेवरचंद जी बोहरा के समस्त परिवारजन, निमेष कंपानी जी, रमेश जी सुराणा, पृथ्वीराज जी कोठारी आदि सहित कार्यक्रमों में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तथा एक दिगंबर प्रतिमा विराजित करने का भी लाभ मिला था।

कॉलिंनडेल का यह जैन सेंटर 30000 स्क्वायर फीट में बना है। मैंने पहले भी उल्लेख किया था कि यहां पर 2 साल पहले कार्यक्रम में हाल ही में हुए एयर क्रैश में दिवंगत श्री विजय रुपाणी जी भी साथ में थे ,तथा हम लोगों ने लंदन जैन समाज के साथ मिलजुल करके बहुत ही अच्छे से कार्यक्रम किये थे। पिछले महिने 28 और 29 जून 2025 को संपन्न हुए द्वितीय वार्षिक कार्यक्रम की सफलता में जैन सेंटर के चेयरमैन श्री समीर शाह, तथा अध्यक्ष डॉक्टर अजय शाह, श्रीमती अल्पा कोठारी, सूरज बाफना आदि ने प्रमुख भूमिका निभाई। ध्रुवी बाफना ग्रुप व अन्य भाई–बहनों ने कल्चरल प्रोग्राम भी प्रस्तुत किया।

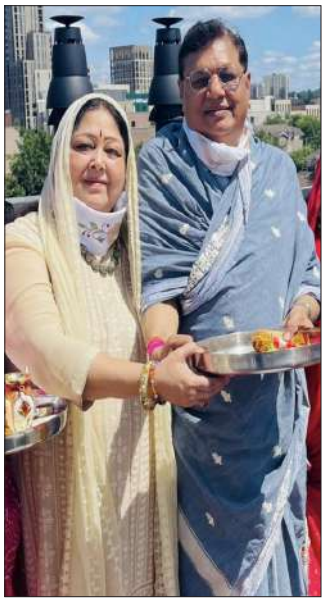

**-डॉ मणीन्द्र जैन,**
राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन महासमिति,
कार्यकारी अध्यक्ष जियो, एवं FCP जीतो

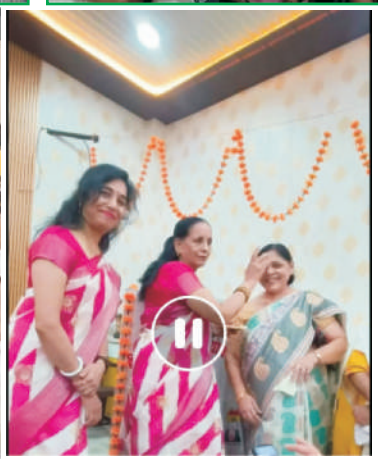

श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति मुरादाबाद संभाग द्वारा एक प्रोजेक्ट जिसमें न्यूरो स्पेशलिस्ट डॉक्टर आनंद सिंह जी की वार्ता, और स्त्री रोग स्पेशलिस्ट डॉक्टर प्रगति गुप्ता जी की देखरेख में यह प्रोजेक्ट सफल रहा।

श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति की मासिक सभा में उपमंत्री मृदुला जैन को वैवाहिक वर्षगांठ की शुभकामना देकर सम्मानित किया गया।

**श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति मुरादाबाद संभाग द्वारा गौशाला में गौमाता को चारा खिला कर एक दिन की चारे की व्यवस्था भी की गई।**

**The PhD award ceremony at Russian Science College Mumbai Awarded five new PhDs under our Zoroastrian College group. Dr. Manju jain National head Dr. Richa jain national guide & National accessor & Vinay jain National Coordinator jain PhD Bhaktamber & Namokar mantra.**

श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति मुरादाबाद के तत्वावधान में श्रुत पंचमी के सुअवसर पर जिनवाणी माँ की सेवा कर सुसज्जित किया गया।

श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति अलीगढ़ संभाग द्वारा श्री नेमीनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक के शुभ अवसर पर दुग्ध एवं मिष्ठान वितरण किया गया।

-पूर्वी जैन, प्रांतीय महामंत्री - अलीगढ़ उत्तर प्रदेश

# विशिष्ट शिरोमणि संरक्षक

## डॉ. मणीन्द्र जैन
सुपुत्र–स्व. श्री इन्द्रमणि जैन

G-60 ईस्ट आफ कैलाश
नई दिल्ली–110065
मो. 9810043108

# शिरोमणि संरक्षक

### श्री कमल जैन
F.504, वर्धमान हाइट्स
रिलाइंस पैट्रोल पंप के सामने
जी.ई. रोड, गंजपारा
पोस्ट दुर्ग
छत्तीसगढ़–491001
मो. 9300683637
9340348338

### श्री सजल जैन
जय आनन्द परिसर
FLAT No.-201
द्वितीय तल
जैन गली गाँधी चौक
पोस्ट दुर्ग (छत्तीसगढ़)
मो. 9811120344

### श्री अशोक कुमार जैन
C-305, सूर्या प्लेस
अग्रसेन भवन सिटी
लाइट के सामने
पोस्ट–सूरत
(गुजरात)
मो. 9327912345

### श्री अनिल जैन
28–29
मान सरोवर कॉलोनी
दिल्ली रोड,
मुरादाबाद (उ.प्र.)
मो. 9837030030

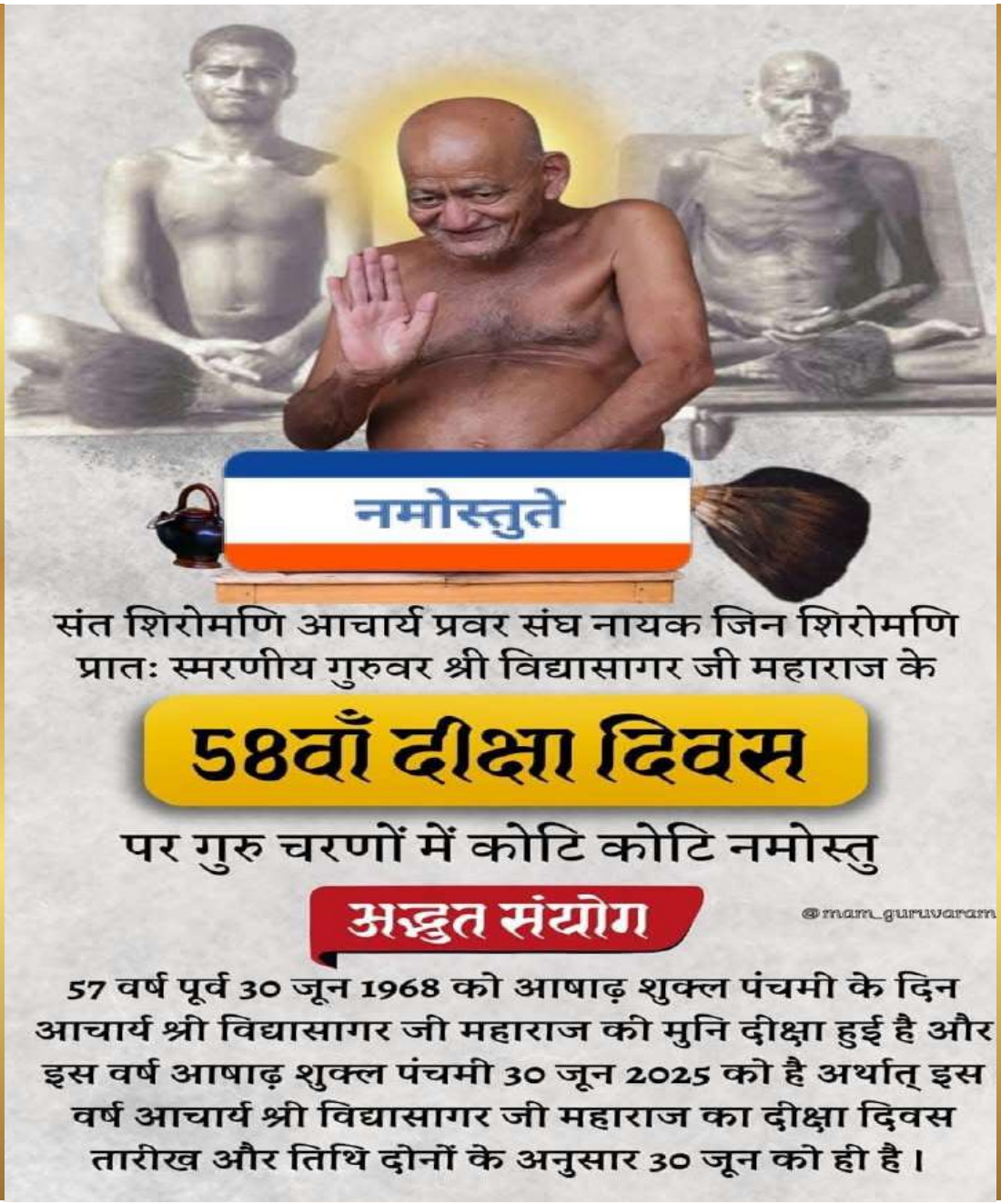


If Undelivered please return to :
70, Kailash Hills New Delhi-110065
Mobile : 9810043108,8826578600
E-mail : sdjmsnational@gmail.com

To,_____

_____

_____